6.निष्क्रमण

यह सँस्कार जन्म के तीसरे शुक्ल पक्ष की तृतीया या चौथे मास में जिस दिन को उसका जन्म हुआ है; उस तिथि में अथवा जब मन को अच्छा समय प्रतीत हो तभी करना उचित है । उस दिन घर से बाहर वहाँ ले जायें, जहाँ का वायु और स्थान शुद्ध हो; जहाँ भ्रमण करना स्वास्थ्य के लिये सर्वोत्तम हो ।

निष्क्रमण का अर्थ होता है -बाहर जाना अर्थात्घर से बाहर जाना । स्वस्थ शरीर व मन के समुचित विकास के लिये शुद्ध वायु तथा प्रकाश उत्तम है । घर की हवा बन्द होने से वह अपेक्षाकृत कम स्वास्थ्य वर्द्धक है । अत: निष्क्रमण सँस्कार के बाद प्रतिदिन वच्चे को अगर थोड़ी देर के लिये खुली हवा तथा प्रकाश में रखें तो निश्चितरुप से उसके स्वास्थ्य में उत्तमता आयेगी । शरीर पुष्ट होकर जलवायु के अनुकूल बनेगा, साथ ही रोगाणुओं से लड़ने की ताकत शरीर में अधिकाधिक बढ़ेगी । इससे दीर्घायुष्य प्राप्त होगा । अत: जब दिन खुला सामान्य तापमान व प्रकाश से युक्त हो तब हमें इस कार्य के लिये समय का लाभ ले लेना यथोचित होगा । यजुर्वेद २६/१५ में ठीक ही कहा है- " उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रोऽजायत" । पर्वतों के गुफाओं में तथा नदियों के संगम पर ऋषि-मुनि साधना किया करते हैं जो आज भी यह सार्थक है क्योंकि इन स्थानों पर प्राय: हवा शुद्ध व शीतल होती है । इस कारण निष्क्रमण हेतु घर से दूर किसी वनस्थ आश्रम, वाग, यज्ञशाला आदि शुद्ध स्थान को चुनना श्रेयस्कर होगा ।

विधिगत्विचार- प्रात: काल निष्क्रमण सँस्कार घर में अथवा यज्ञशाला में विधिवत्करके ही वच्चे को घर से बाहर ले जायें ताकि वच्चे का मन प्रारम्भ से ही सँस्कारित रहे और माता-पिता भी मन से प्रसन्न रहें । साथ में माता-पिता के अलावे परिवारगत् कोई अन्य सदस्य या मित्र गण का होना भी सम्भावित है । कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों को भी समझना आवश्यक है ।

१. शुक्ल पक्ष तृतीया का महत्त्व- निष्क्रमण सँस्कार के लिये शुक्ल पक्ष की तृतीया को चुनना बिलकुल शास्त्रीय बताया गया है । शास्त्रों में इस दिन को अभ्युदयारम्भ-सूचक बताया गया है । सांसारिक विकास को अभ्युदय कहते हैं । ध्यान दें तो दूज का चाँद तो कभी दिखता है कभी नहीं, ऐसे ही प्रथमा का चाँद है पर तृतीया का चाँद तो अपेक्षाकृत काफी मात्रा में दिखता है जो शुभारम्भ का सूचक है । चौथे मास में उसके जन्म तिथि को लिया जाना प्रसन्नता पूरक है । जन्म तिथि की खुशी भी इस समारोह में मिल जाने से यह और सुखकारी हो जाता है । पर ऐसा न हो सके तो यह भी कह दिया गया है कि जिस दिन मन

भाये, उस दिन भी कर लें । मन की खुशी से बढ़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती । अत: जब मन अच्छा महसुस करे, दिन खुला दिखे, हवा व प्रकाश संतुलित हो तो यह सँस्कार अवश्य कर लें । तीन-चार मास तक वच्चे का शरीर बाहरी जलवायु को सहन करने योग्य लगभग हो जाता है । इस कारण सँस्कार के लिये उपयुक्त काल उचित है ।

२. पत्नी का वायीं ओर बैठना- इस सँस्कार में पत्नी अपने पति की वायीं ओर ही बैठती है । यहाँ भी नामकरण की भाँति ही पत्नी वच्चे को लेकर उसे अपने पति के गोद में देती है । भावना वही है जो नामकरण में जतायी गयी है । पति-पत्नी मिलकर वच्चे के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेवारी लेते हैं पर पहले पिता गोद में लेकर अनुभव करता है फिर उसे अपनी पत्नी को वापस कर उसकी जिम्मेवारी को अनुभव करने का अवसर देता है । इसके लिये पत्नी पहले पति से वचन लेकर फिर स्वयं वचन देती हुयी कहना चाहती है कि इस वच्चे के पालन-पोषण में सदैव पूरी साथ निभाऊँगी । ऐसा कहकर वह एक माता के दायित्व को पूरी तरह समझती है ।

३. दिन में सूर्य और रात में चन्द्र दर्शन करने का विधान- यह भी एक महत्त्वपूर्ण विधि है कि बाहर से जब लौटकर घर आवें तब रात्री में चन्द्र के भी दर्शन करें । सूर्य दर्शन से गर्मी की अनुभूति और चन्द्र दर्शन से शीतलता का ज्ञान कराना उद्देश्य है । दिन में क्रियाशील रह सब काम-काज करें और रात्री में शयन आदि द्वारा आराम करें, दिन और रात्री के कार्यों को सदा संतुलित रखें तभी जीवन प्रगतिशील, ऊर्जामय, नियन्त्रित और सुखमय सिद्ध हो सकेगा । यहाँ वच्चे के अन्दर सृष्टि-विज्ञान का सँस्कार डालना भी उद्देश्य है । सूर्य और चन्द्रमा दोनों सृष्टि-विज्ञान को समझने में सदैव प्रमुख तत्त्व हैं । वस, इन्हीं कारणों से यह विधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक है ।

४. कान में मन्त्र पढ़ना- पारस्कर गृह्य सूत्र-१.१८.६ में केवल बालक के कान में मंत्र पढ़ने का विधान है पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बालक हो या बालिका, सबके कान में समानरुप से बिना किसी भेद-भाव के मंत्र-पाठ करने का विधान किया है । उस समय पति द्वारा पत्नी का सिर भी मौनरुप से स्पर्ष करने का आदेश किया गया है । इस विधि द्वारा वच्चे में बिना किसी भेद-भाव बालक/बालिका दोनों को आध्यात्मिक, आस्तिक एवं वैदिक सँस्कृति का सँस्कार डालना है और साथ में स्त्री के सिर को स्पर्श कर उसके साथ प्रेम, सहयोग व अपनापन की अनुभूति करना है । इसी प्रकार सब सँस्कारों में जाने कि सब सँस्कार बालक हो या बालिका, दोनों के लिये सदा समान रुप से अनिवार्य है । दोनों को समान रुप से इस संसार में शिक्षित, दीक्षित और सँस्कारित होने का अधिकार है । अत: हमें इसका ध्यान हमेशा रखना चाहिये ।

५. आशीर्वाद - सब आगन्तुक स्त्री-पुरुष मिलकर वच्चे के दीर्घायुष्य व सुख विकास हेतु कुशल पुरोहित के नेतृत्व में अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दें । वह वच्चा प्रतिपल अन्दर-बाहर के सब व्यावहारिक गुणों को धारण करता हुआ बढ़ता रहे ।

Nishkraman kaa Mantra vidhi bhag